



67

थन के ससर्वनाम मंगल पूजा साधन करु याग साधु गिरि सुयन शुभ नाह गिरि ॥
मया गसा देव पूजा धि विरथ याय ॥ थन पूजा ऊजमान या सक प्रमान प्रस
पचा न जो लं ॥ १ ॥ १०० ॥ ३३३ ॥ १००० ॥ थुनि पूजा जो लं झा पी था प ल पंग
य ॥ थुनि धून काडी झा पी पूजा मद्य धा मनि वाने ॥ ३३ नमो गग वग वज्र ध
न सा ग न प्रम दना श्री गथा गगा यी ३३ नमो गग वग वज्र धा ॥ ३३ व

ऊर म हा व जी विद्या व ऊर म हा न जी व ऊर म हा व धि म सु प्रस कि म नि सर्व क
मो व न ध विर धा ध ने स्वा हा ॥ थुनि पद पा ड ॥ के स सर्व वा द क न कु स थू ना डी
हाय ॥ ग्रा का स क र्ति नी ३३ क हाय पूजा जो लं न मु ना क पू या डी ची न रा ल
प ॥ ७७ द्वा व यि स्वा र न ना प र्थ क पूजा म धे २ लो न पि न वि न य ग ॥ ग
सा द के क पूजा ग सा शु प न मि ग पूजा रु लं ल र न ॥ रु न थु रु म कु न पूजा

ग (अधनयायाडं वज्रवक्रं हं रा
जगिगाडं वज्रसूत्रं हं रा। ॥



डांवजासनदूंगाधमूडा

काशी ~~प्र~~ नवजनीधर



थन वजासनमूढानंदवद्याः
महलः श्रद्धिहानयाय॥

॥ अथ मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ वाङ्मनत्र कर्मधमनशाया ॥ ५४ ॥



ॐ वज्रमनत्रं राधामूढा ॐ वज्रमनत्रं ॐ वज्रमनत्रं ॐ वज्रमनत्रं



थन वजासनमूदानदवद्याः ॥ मूदानमस्तुलः (मूदा कनेः) (हान भूक भन
मन न भविष्यते याथा ॥ दधने याथा ॥ आ कर्षेन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सर्वजगत्सर्व

शिवजावमहा

玆

धनपा
दिश।

ॐ वज्र
कुसुम
द्वारा

बंधन

मादन

आवेण

आपाद्यप्रणिच स्वाहा ॥ ॐ वज्र धारु मलुस्य देवस्य आभूय प्रणिच स्वाहा ॥
 ॐ वज्र धारु मलुस्य देवस्य आभूय प्रणिच स्वाहा ॥ ॐ वज्र
 धारु मलुस्य देवस्य आभूय प्रणिच स्वाहा ॥ ॥ धन
 विधिवक्रमन देवपूजा ॥ आकाशपूजा ऊर्ध्वपूजा ऊर्ध्वपूजा ऊर्ध्वपूजा ऊर्ध्वपूजा
 पितृपूजा याकशाहपाजी धमनपूजा गमूडा रावनपूजा याय ॥ ॥

यन हस्त कपन द्वागवर्त मूदान पूजामर्त पूजाने थडा मूडा का नाम मद्य
 मूदान ॥ धन याय ॥ समूद मूडा के काडा धरुग थाप दये ॥ सर्व मद्य
 गम पूषा पूजामद्य समूद मूडा नक्षत्र समय द्रुं ॥ ॥ वज्र पूषा द्रुं ॥ आव
 ज पूषा यमि रुखा हा ॥ ॥ सर्व मद्य गम धूप पूजामद्य समूद मूडा
 नद्य समय द्रुं ॥ ॥ हान मूदान पूषा धिष्णान ॥ ॥ धाष मूडा धरुग

दाहस्तपनाउं वज्रधूपयानां उं आव ऊधूपं प्रणि च स्वाहा ॥ ॥ उं सर्वग
थागन दीप पूजा मेघ समुद्रसू न धं समयहं ॥ ॥ उं वज्रदिप
जीनां उं आव ऊधूपं प्रणि च स्वाहा ॥ ॥ उं सर्वग थागन गन्धपूजा
मेघ समुद्रसू लनं समयहं ॥ उं वज्रगन्धपूजा आव ऊधूपं प्रणि च
स्वाहा ॥ ॥ उं सर्वग थागन नगपूजा मेघ समुद्रसू न धं समयहं ॥

सवकवांतां ज्ञाव उने विद्य प्रमि र्स्वाहा ॥ ॥ थन गुलिग पूजा
 जील धुगु कथ धी धा उठा विं ठमि ॥ अदि पंड य चाल द का यामू दा का यामू
 दा वा का सी हि न या द्वा ड पूजा या या ॥ ॥ थन ला ध्या घ ॥ वा द न सु गि
 उं सर्व वा पि रु वा ग्ध ग्ध र्ग गा धि प मे र्जि नै ॥ ॥ धा रु क महा बा र्ज वै भा च धी
 नम सु र्ग ॥ ॥ ॐ नम र्ग व क उ स स्था य व क न त्रा य न नम ॥ ॐ नम र्ग व

क ध मा य नम र्ग व क उ स स्था य व क न त्रा य न नम ॥ थन उ ह्या ना या ग सा द्वा जा
 प आ हं मि वि य ॥ हा मा वि य ॥ प ॥ क प वा न पू जा ॥ प ॥ ला धि रु ॥ थन अ व
 ग प थ म ध मा क न धु ग क थ र्ग न द धी र्ग र्ग मा ध मा न न पू जा या य ॥ पा थ दि
 नि र्ग या य रु ला ॥ ॥ अ व र्ग ग प ध मा या ॥ क ॥ ॐ न मा म र्ग धी य स्वा
 हा ॐ न मा धु धी य स्वा हा ॥ ॐ न मा उ रु म धी य स्वा हा ॥ ॐ न मा र्ग न म धा र्ग

261 I
261 I
261 I

धामगर्गः कायवाक्चिह्नं पूजाप्रख्यानं आह्वानं नियोगम्यामिराटं सर्वगं य
गं कायवाक्चिह्नं अधिनिष्ठमानं कुरु स्वाहा ॥ धनपद्मपूजाप्रणि
ष्टा ॥ सर्वलयास्यकायक ॥ धनमहावलिविजय ॥ वाक्पूजा ॥ पूज्यहृदि ॥ आ
सिद्धोदविसृजेन ॥ सग्वनगय ॥ गुनपूजा ॥ इन्द्रा ॥ धनमहाहृदि ॥ विसृजे
न ॥ धनमुल्लेखं ह्याय ॥ धनपद्मनिधानं ॥ असमाचलासमं सानधर्मिध

३
४ कनूधामकाजगमिद्वरवहाग्निन ४ असमं सर्वगं धसिद्धिगयिन ॥ अस
माचलासवनाय धर्मिधगग ॥ धसमापमं कना धविद्यं गुनसंगं कधि
कपसिमिक ॥ सर्वसर्वधगुचनसिद्धिदायी कविगगापमं पूज्यसमं
सिद्धिपू ॥ सगगामला ककनूधधगगाग्निनापनिधानसिद्धिबधिनाध
धर्मगाजगगार्थसा धनपद्मासमं निरुगगाविनाचनिमहा कपात्मकं

ना
नानिनिधनाक्रुन्नयानिकाचनरपुजगमिलोकवयसिद्धिदायिका
ममिगामिमिगमपूससमाकिमंगसुगमिगमपिअहसुधर्मगागिस
मयायसिद्धिवनदानुभवममगायगमिगमासदासकलविशोक
वलसिद्धिदायिका, नाथपियधगमिका, अनात्रगा॥ ॥पदकिदा
मथा॥ ॥आकाशाद्यादविद्रुवापदादिनिधनपत्रमहावजस

यसत्ववजससुप्रसिद्धमवासवीरुममहासिद्धिमहेध्वयोधिदेवगम
वैवजधनोत्राजासिद्धिमपयमाक्रुन्नयानिर्दोषभाठवगध्यासिसर्व
नागानूनागनेशगत्वधिसिद्धिमवनूमहाभागमहागम॥अथक
द्यत्रमोगादिमूकगथागमसमक्रुद्रसर्वोत्सावाधिसत्वपसिद्ध
मवासवीरुममहासिद्धिमहेध्वयोगमूद्रयासिद्धिवजससकलीक

गङ्गायनं ममा सर्वं सत्त्वमना व्यापि सर्वं सत्त्वमना विमलं भव सर्वं सत्त्वमना विमलं
कामाद्युत्तमया धीर्धर्मधनसत्त्वमना मं प्रह्लापा यात्ममभुलं न न सत्त्व
नेभनाथ कामात्पनि पूजयेत् ॥ ॥ धनं पूजयेत् कामात्पनि पूजयेत् ॥
प्रविशित्व विविक्तान्यागसा मया गसा गा यश्च कर्म सायुर्कर्म सर्वं
सायुर्कर्म ॥ ॥ गमथायत्तमं कर्म सकलसत्त्वमना विमलं सत्त्वमना

सकलसत्त्वमना विमलं कर्म सायुर्कर्म सकलसत्त्वमना विमलं सत्त्वमना
पञ्चमाश्रित्यै ॥ १ ॥ यत्तमं कर्म सकलसत्त्वमना विमलं सत्त्वमना
विमलं सत्त्वमना विमलं सत्त्वमना विमलं सत्त्वमना विमलं सत्त्वमना
पञ्चमाश्रित्यै ॥ २ ॥ यत्तमं कर्म सकलसत्त्वमना विमलं सत्त्वमना
विमलं सत्त्वमना विमलं सत्त्वमना विमलं सत्त्वमना विमलं सत्त्वमना

सुकर्म

वक्रपत्रमाशिक्षके॥ ६ ॥ यद्येव वक्रमत्र वक्रधर्मो वक्रिमूद्रागरघन
 सादिगस्य विद्य कस्य वै न च नमः ॥ ७ ॥ वक्रविविनास कस्य गल कूल
 वक्रुष्मन्तिकनवाश्री॥ ८ ॥ वक्रवक्रमत्र वक्रकस वक्रपादः
 समुष्टिना यमसिद्धि नमः भूमिपदसिद्धि यम कूलं हि न कर्मपत्रमार्थसिद्धि
 गलमूलं वक्रुष्मन्तिकनवाश्री॥ ९ ॥ यममूलं भूमिपदसिद्धि नमः

ः कुरातमकस्य

सज्जिनपदस्य धर्मो केतुना वक्रममहासुखं गच्छति न भूषितत्स
 क्वचिन्नस्य निविधिगस्य गलमगलं वक्रुष्मन्तिकनवाश्री॥ १० ॥
 यमगलं कमलपारधस वक्रमिह वक्रायुधं प्रवलेता वक्रमूढमर्क
 स्य लोकं ध्वजस्य सुगमालस कस्य गलं गलं वक्रुष्मन्तिकनवाश्री॥
 १ ॥ यद्येव वक्रलास्य वक्रमामं ल्य वक्रगीगस्य यं ३ पुष्पधूपवनदी

